सर्व शिक्षा अभियान

सब पढ़ें सब बढ़ें

अवसर

3

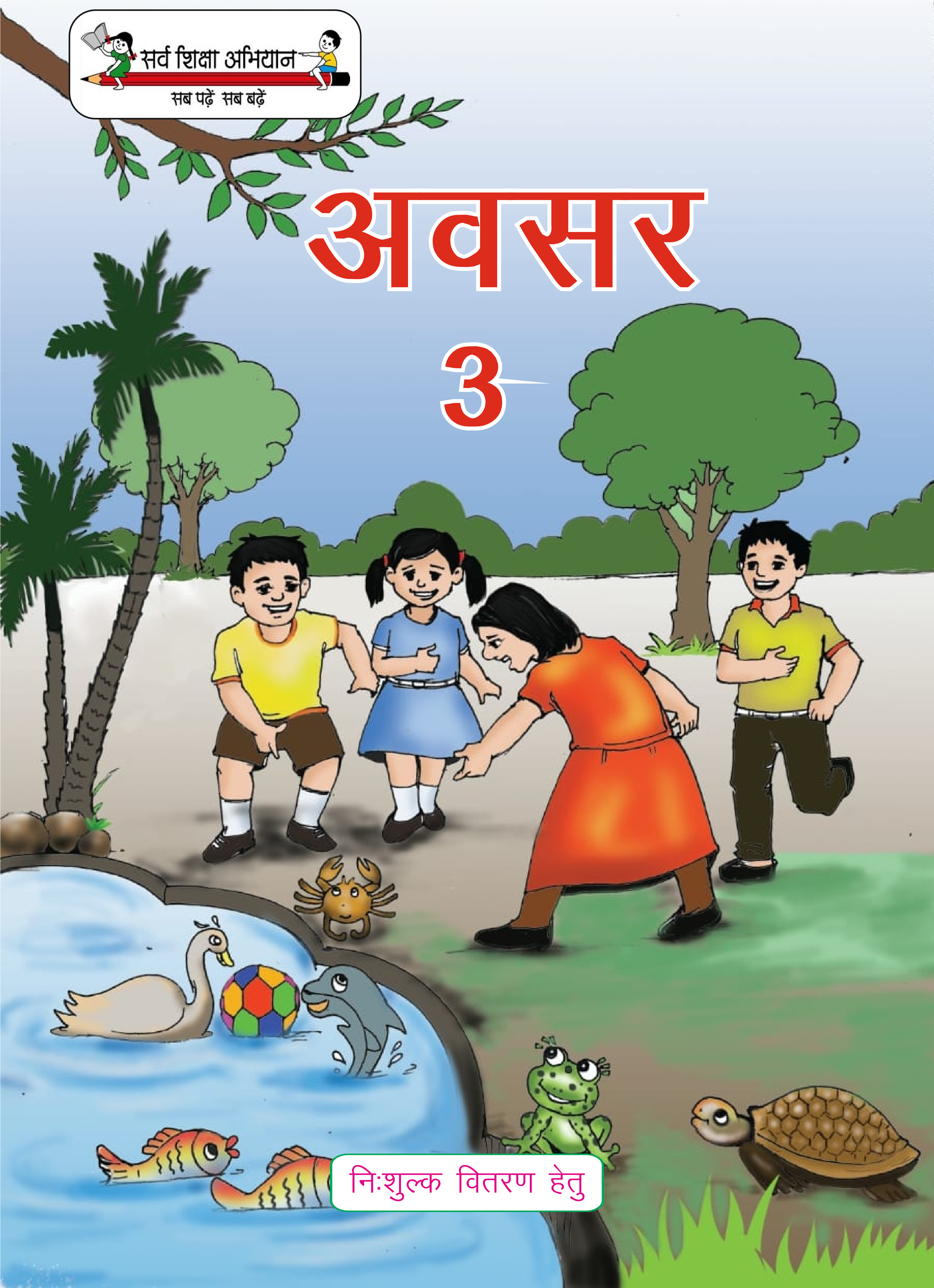

निःशुल्क वितरण हेतु

शिक्षकों से बातचीत

शिक्षा प्राप्त करना सभी का संवैधानिक अधिकार है। यह अपेक्षा रहती है कि सभी बच्चे औपचारिक रूप से शिक्षित होने के लिए विद्यालय में नामांकित हों और शिक्षा ग्रहण करें। भिन्न विशेषता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भौतिक संसाधन, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों में अपेक्षित बदलाव करते हुए समावेशी वातावरण व क्रिया-कलाप को भी अपनाया जा रहा है। बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के भाषायी दक्षता विकास के लिए हम सभी को उनकी क्षमता के अनुरूप पाठ्यक्रम व शिक्षण के तरीको को अपनाने की आवश्यकता है, जिससे वे सहज और सरल तरीके से भाषा विकास से जुड़ी गतिविधियों में प्रतिभाग कर सकें। चिंतन, चुनौती एवं रूचि को ध्यान में रखकर किये गये प्रयास सार्थक परिणाम देंगे।

बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता है-

१ एक साथ कई जानकारियों को प्रदर्शित न किया जाय।

२ आरम्भिक बातचीत के दौरान उनकी क्षमता व विशेषता का आकलन/मूल्यांकन को संदर्भ में लिया जाय।

३ विषयवस्तु को समझाने के लिए यथासम्भव मूर्त वस्तुओं का उपयोग किया जाय।

४ अधिगम सम्प्राप्ति का मूल्यांकन सतत् रूप से करते हुए विषयवस्तु/शिक्षण बिंदु को विस्तार दिया जाय। शिक्षण अधिगत सामग्री का प्रयोग करते समय यह ध्यान रखा जाय कि चित्रों का आकार बड़ा व स्पष्ट हो। कई रंगों का प्रयोग एक साथ न हो।

५ छोटी-छोटी कविता एवं कहानियों को सुनाया जाय। अधिक से अधिक २ या ३ पात्रों वाली कहानी जो किसी समस्या का समाधान कर रही हो या कोई संदेश दे रही हो, को सुनाया जा सकता है।

६ पठन हेतु निर्धारित वर्ण एवं शब्द को बोल्ड फॉन्ट में प्रयोग किया जाय।

७ बच्चों के सभी प्रयासों पर पुनर्बलन अवश्य दिया जाय।

८ भावात्मक रूप से जुड़ाव इन बच्चों के अधिगम सम्प्राप्ति को बढ़ाने में मदद करता है।

९ प्रत्येक बच्चे की प्रगति/उपलब्धि का आकलन उसके उपलब्धि के सापेक्ष किया जाय।

१० पाठ्य वस्तु को छोटे-छोटे भागों/चरणों में विभक्त कर शिक्षण कार्य किया जाय।

११ भाषायी दक्षता विकास हेतु दृश्य-श्रव्य सामग्री का भी प्रयोग किया जा सकता है।

बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के साथ कार्य करते समय धैर्य एवं विभिन्न तकनीकों के प्रयोग की आवश्यकता होती है।

आप से यह अपेक्षा है कि आप बच्चों के साथ शिक्षण कार्य करते हुए उपर्युक्त बातों को भी ध्यान में रखते हुए सफलतापूर्वक लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे।

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद्

अवसर—3

नाम : ------------------------------

माता का नाम : ------------------------------

पिता का नाम : ------------------------------

विद्यालय का नामः ------------------------------

पता : ------------------------------

निःशुल्क वितरण हेतु

मुख्य संरक्षक : श्रीमती रेणुका कुमार, अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश।

संरक्षक : श्री विजय किरन आनन्द, महानिदेशक (स्कूल शिक्षा) उ0प्र0 तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ0प्र0 सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, उ0प्र0, लखनऊ।

समन्वयन : श्रीमती ऋचा जोशी, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।

विशेष समन्वयन : श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव, निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।

समीक्षा : श्री अजय कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ, श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस0सी0ई0आर0टी0, उ0प्र0, लखनऊ,।

परामर्श : प्रो0 वशिष्ठ अनूप (हिंदी विभाग) काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी, डॉ0 आर0 ए0 जोसेफ, निदेशक, विकलांग समाकलन संस्थान, करौंदी वाराणसी, डॉ0 आशीष कुमार गुप्ता, एसो0 प्रो0, काशी हिन्दू वि0वि0 वाराणसी, डॉ0 उदयन मिश्रा, एसो0 प्रो0, मनोविज्ञान विभाग हरिश्चन्द्र पी0जी0 कॉलेज, वाराणसी, डॉ0 विनीता, असि0 प्रो0, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू वि0वि0, वाराणसी।

संपादन : श्रीमती नीलम यादव, डॉ0 अमरजीत, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी।

लेखन : श्रीमती रेखा वर्मा, श्रीमती नमिता सिंह, श्रीमती रत्नेश कुमारी पाण्डेय, श्री अखिलेश्वर प्रसाद गुप्ता, डॉ0 कुँवर भगत सिंह, श्रीमती अर्चना सिंह, श्रीमती अनीता शुक्ला, श्रीमती सुमन पाण्डेय, स0 अ0 बेसिक, श्री श्यामलाल पटेल, श्री पवन कुमार, श्री रवि प्रकाश सत्ये, श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती निधि विश्वास, श्रीमती अंजना श्रीवास्तव, डॉ0 नीला विशालक्ष्मी बापट्ला, बौद्धिक दिव्यांगता से संबंधित विशेषज्ञ श्रीमती उषा कुशवाहा, श्रीमती पुष्पा देवी, श्रीमती नीलू सिंह, श्रीमती आभा देवी, इन्टीरेण्ट टीचर बेसिक ।

चित्रांकन : श्री संजय यादव, श्री अखिलेश कुमार गौतम, सरिता पटेल, श्रीमती प्रज्ञा श्रीवास्तव, श्री सुनील कुमार, श्री ज्ञान प्रकाश कुशवाहा, शालिनी सिंह, कु0 कुसुम, श्री ईश्वर दयाल, श्री आनंद, श्री सुभाष चन्द्र, श्री अजीत कुमार।

कम्प्यूटर ले–आउट : श्री मनोज कुमार यादव, श्री विनय कुमार, श्री अजीत कुमार कौशल।

आभार : पाठ्यपुस्तक के विकास में विभिन्न संस्थाओं की पाठ्य–सामग्री/साहित्य का उपयोग किया गया है। हम उन सभी के प्रति आभारी हैं।

मुद्रक एवं प्रकाशक :

संस्करण :

शिक्षा सत्र : 2020–2021

उत्पादन : पाठ्य पुस्तक विभाग, शिक्षा निदेशालय (बेसिक), उ0प्र0।

© **उत्तर प्रदेश शासन।**

प्राक्कथन

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 सभी बच्चों को पढ़ने–लिखने का अवसर प्रदान करता है। पाठ्यपुस्तकें सीखने–सिखाने का सबसे सशक्त एवं महत्त्वपूर्ण साधन हैं। बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों के दैनिक व सामाजिक व्यवहार सामान्य बच्चों से अलग होते हैं। उनके सीखने की क्षमता अन्य बच्चों से धीमी व अलग होती है। ऐसी स्थिति में बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 तथा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम–2016 के सिद्धान्तों के दृष्टिगत इन बच्चों को विद्यालयी शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने हेतु पाठ्यपुस्तक का विकास किया गया है। यह पुस्तक बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के साथ–साथ उनके अभिभावकों एवं शिक्षकों के लिए भी उपयोगी है।

बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों में सीखने की गति, संवेगात्मक विकास, बौद्धिक कार्य व व्यवहार में अनुकूलन की क्षमता कम होती है। सभी बौद्धिक दिव्यांग बच्चे एक जैसे नहीं होते हैं तथा अधिगम अक्षमता में प्रशिक्षण के द्वारा सुधार लाया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षण एवं प्रशिक्षण हेतु योग्य बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को सिखाने में माता–पिता, अभिभावकों एवं सेवादाताओं को भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह पुस्तक उन अभिभावकों एवं संरक्षकों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी, जो बौद्धिक दिव्यांग बच्चों को दैनिक एवं व्यावहारिक जीवन के क्रियाकलापों में आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं।

पुस्तक में दैनिक जीवन में उपयोगी क्रियाकलापों, आसपास के परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं की पहचान व उपयोग, परिवार व अन्य संबंधियों की पहचान, विभिन्न प्रकार की भावनाएँ प्रदर्शित करना आदि विषयों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। पुस्तकों की भाषा अत्यन्त सरल है तथा बच्चों के बौद्धिक स्तर तथा उनकी क्षमता के अनुरूप विकसित की गयी है। पुस्तक में निहित सामग्री के संप्रेषण विधि अत्यन्त साधारण व सरल है। पुस्तक के विकास में उन कौशलों एवं दक्षताओं को ध्यान में रखा गया है जो कक्षा–3 लिए अपेक्षित हैं।

इस पाठ्यसामग्री को विकसित करने में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, के विशेषज्ञों, निदेशक,राज्य हिन्दी संस्थान, उ0प्र0, वाराणसी के शोध प्रवक्ताओं, बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षकों तथा विशेष रूप से बौद्धिक दिव्यांग बच्चों हेतु स्थापित संस्थानों में कार्य करने वाले शिक्षकों को साधुवाद देता हूँ।

हमें यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों में अपेक्षित जीवन कौशल के साथ–साथ अपेक्षित भाषायी दक्षता के विकास में भी सहायक होगी।

अप्रैल 2020

डॉ0 सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
एवं
अध्यक्ष, उ0प्र0 बेसिक शिक्षा परिषद्

पाठ्यक्रम

सुनना	कही गई बातों एवं सामान्य निर्देशों को सुनकर समझना। अपने, परिवेशीय वस्तुओं एवं पशु–पक्षियों के नामों को सुनकर समझना। गीत, कविता और कहानी को हाव–भाव के साथ सुनना।
बोलना	अपने बारे में बोलना। अपनी बात बताने का प्रयास करना। सुनी हुई बातों को व्यक्त करना। सुनी हुई कविता, गीत और कहानी को बोलना। चित्रों और चित्र पर आधारित पाठों को देखकर स्वतंत्र अभिव्यक्ति व शिष्टाचार के बारे में मौखिक अभिव्यक्ति देना।
पढ़ना	'अ' से 'अः' तक वर्णों की पहचान करना। अमात्रिक शब्दों को चित्रों के साथ पढ़ना आ, इ एवं ई की मात्रा वाले शब्दों को चित्र के माध्यम से पहचान कर पढ़ना। सरल कविता, गीत, कहानी को सस्वर पढ़ना।
लिखना	मस्तिष्क एवं अंगुलियों में सामंजस्य बनाते हुए लेखन पूर्व तैयारी करना जैसे–स्क्रीबलिंग, आकृति में अंगुली फिराना, सीधी, आड़ी, तिरछी एवं वक्र रेखा खींचना।

शिक्षण संबंधी परिणाम

बच्चे–

- प्रार्थना की मुद्रा जैसे–सीधे खड़े होना, हाथ जोड़ना, आँखें बंद करने की प्रक्रिया को अपनाते हैं।
- अपना नाम बताते हैं।
- अपने माता–पिता का नाम बताते हैं।
- अपने परिवार के सदस्यों के बारे में बातचीत करते हैं।
- अपनी कक्षा की वस्तुओं जैसे–कुर्सी, मेज, श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर, बस्ता, पेंसिल, रबर की पहचान करते हैं।
- आकृतियों पर अँगुली फेरते हैं। अँगुलियों की छाप लगाते हैं।
- चित्र देखकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं।
- कविता को सुनकर उसके भाव को समझते हैं और आनंद की अनुभूति करते हैं।
- कुछ ध्वनियों को सुनते हैं और समझते हैं।
- कहानी सुनकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की कोशिश करते हैं।
- परिवेशीय वस्तुओं जैसे पेड़–पौधे, पशु–पक्षियों, फल–फूल आदि के बारे में बताते हैं।
- पुस्तक को सही ढ़ंग से पकड़ते व पलटते हैं।
- दैनिक कार्यों जैसे–शौच जाना, ब्रश करना, हाथ धोना, सही ढंग से भोजन करना आदि को करने का प्रयास करते हैं।
- खींची गई रेखा (सीधी/तिरछी) के ऊपर रेखा खीचते हैं।
- आ, इ, ई की मात्रा वाले शब्दों के चित्रों को देखकर बोलते हैं।
- स्वर गीत (अ से अः तक) को सुनकर बोलने का प्रयास करते हैं।

विषय सूची

पाठ सं0	पाठ का नाम		पृष्ठ सं0
	प्रार्थना		8
1	मुझसे मिलिए		9
2	अच्छे बच्चे	कविता	10
	बटन खोलें–बंद करें		11
3	आओ गाएँ	वर्णमाला गीत	12–19
	रंग भरो		20
4	अंडा किसका	कहानी	21–22
5	आओ पढ़ें और लिखें –1		23–24
	क, ख, ग, घ, ङ		23
	च, छ, ज, झ, ञ		24
6	पानी	कविता	25
	रंग भरो		26
7	आओ पढ़ें और लिखें –2		27–28
	ट, ठ, ड, ढ़, ण		27
	त, थ, द, ध, न		28
8	कछुआ और खरगोश	चित्रचर्चा	29–30
9	आओ पढ़ें और लिखें –3		31–32
	प, फ, ब, भ, म		31
	य, र, ल, व		32
10	मेरी कार	कविता	33
	रंग भरो		34
11	आओ पढ़ें और लिखें –4		35–36
	श, ष, स, ह		35
	क्ष, त्र, ज्ञ		36

12	हंस और कछुए	कहानी	37–38
13	देखो पढ़ो और लिखो–1		39–43
	दो वर्णों के अमात्रिक शब्द (पढ़ना)		39–40
	दो वर्णों के अमात्रिक शब्द (लिखना)		41
	आओ पढ़ें		42
	अभ्यास कार्य		43
14	सहायता	कहानी	44–45
15	देखो पढ़ो और लिखो–2		46–49
	तीन वर्णों के अमात्रिक शब्द (पढ़ना)		46
	तीन वर्णों के अमात्रिक शब्द (लिखना)		47
	आओ पढ़ें		48
	अभ्यास कार्य		49
	सीखो	कविता	50
16	देखो पढ़ो और लिखो–3		51–54
	चार वर्णों के अमात्रिक शब्द (पढ़ना)		51–52
	चार वर्णों के अमात्रिक शब्द (लिखना)		53–54
18	चुन्नू–मुन्नू	कविता	55
	आओ दोहराएं		56

प्रार्थना

हे ईश्वर, तुमको प्रणाम,
सुबह शाम लें तेरा नाम;
न पड़ें कमज़ोर कभी हम,
न हो मन में कोई अभिमान;
हे ईश्वर, तुमको प्रणाम,
सुबह शाम लें तेरा नाम।

शिक्षण संकेत कक्षा में या प्रार्थना स्थल पर कविता प्रार्थना का हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन कराएँ।

पाठ 1

मुझसे मिलिए

यहाँ छात्र/छात्रा की फोटो चिपकाएँ

- मेरा नाम .... है।
- मेरी माता का नाम .... है।
- मेरे पिता का नाम .... है।
- मैं कक्षा तीन में पढ़ता/पढ़ती हूँ।
- मैं .... में रहता/रहती हूँ।

शिक्षण संकेत

बच्चे की नवीनतम फोटो चिपकाकर बच्चे से संबंधित जानकारी रिक्त स्थान में भरकर बोलने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 2

अच्छे बच्चे

अच्छे बच्चे सीधे सच्चे,
उठते तड़के पढ़ते डट के;
नित्य नहाते नियमित खाते,
मौज मनाते हँसते गाते;
चाहे गर्मी चाहे जाड़ा,
रोज जाते पाठशाला।

शिक्षण संकेत

बच्चों से उनकी दिनचर्या पर बातचीत करें। कविता का अभ्यास हाव–भाव एवं लय से कराएँ। सूर्योदय से पूर्व उठना, समय से पढ़ना, लिखना, खाना, खेलना, स्वच्छता आदि के महत्त्व के बारे में चर्चा करें।

बटन खोलें–बन्द करें

शिक्षण संकेत

बच्चों को बटन खोलने और बटन बन्द करने के विभिन्न चरणों को बताएँ।

पाठ 3

आओ गाएँ

क

कबूतर उड़ने वाला

ख

खरगोश दौड़ने वाला

ग

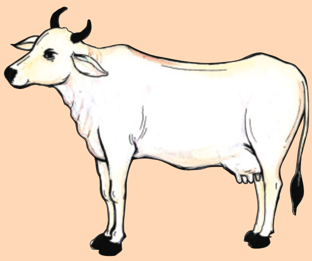

गाय सदा तुम पालो

घ

घास काटकर डालो

ङ

च चम्मच से खाओ खूब

छ छतरी तानो जब हो धूप

ज जहाज पानी पर चलता

झ झण्डा फर–फर उड़ता

ञ

ट टमाटर रोज खाओ

ठ ठप्पा खूब लगाओ

ड डलिया में सब्जी रखते

ढ ढक्कन से खाना ढकते

ण

त

तरबूज गर्मी में खाओ

थ

थरमस में चाय लाओ

द

दरवाजा जाकर खोलो

ध

धनियाँ सब्जी में डालो

न

नल से पानी भर लाओ

प

पतंग तुम खूब उड़ाओ

फ

फल तुम ताजे खाओ

ब

बकरी को घास खिलाओ

भ

भवन है आलीशान

म

मछली की पानी में जान

य यंत्र कार्य को सरल बनाते

र रस्सी पर कपड़े सुखाते

ल लड्डू से हमको प्यार

व वक का मछली आहार

श 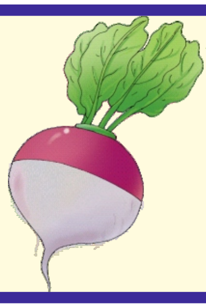 शलजम की सब्जी खाओ

ष 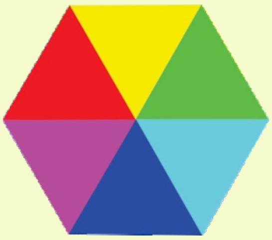 षट्कोण में रंग सजाओ

स सब्जियों में गुण अनेक

ह हाथी की सूँड़ एक

क्ष क्षमा करो प्रभु बालक जान

त्र 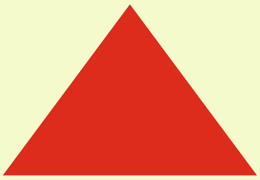 त्रिभुज की हम कर लें पहचान

ज्ञ ज्ञानी देते हमको ज्ञान

पढ़ लिखकर हम बनें महान

शिक्षण संकेत वर्णमाला गीत का अभ्यास हाव–भाव के साथ कराएँ। ध्वनियों एवं चित्रों के माध्यम से वर्णों की पहचान तथा उच्चारण अभ्यास कराएँ।

रंग भरो

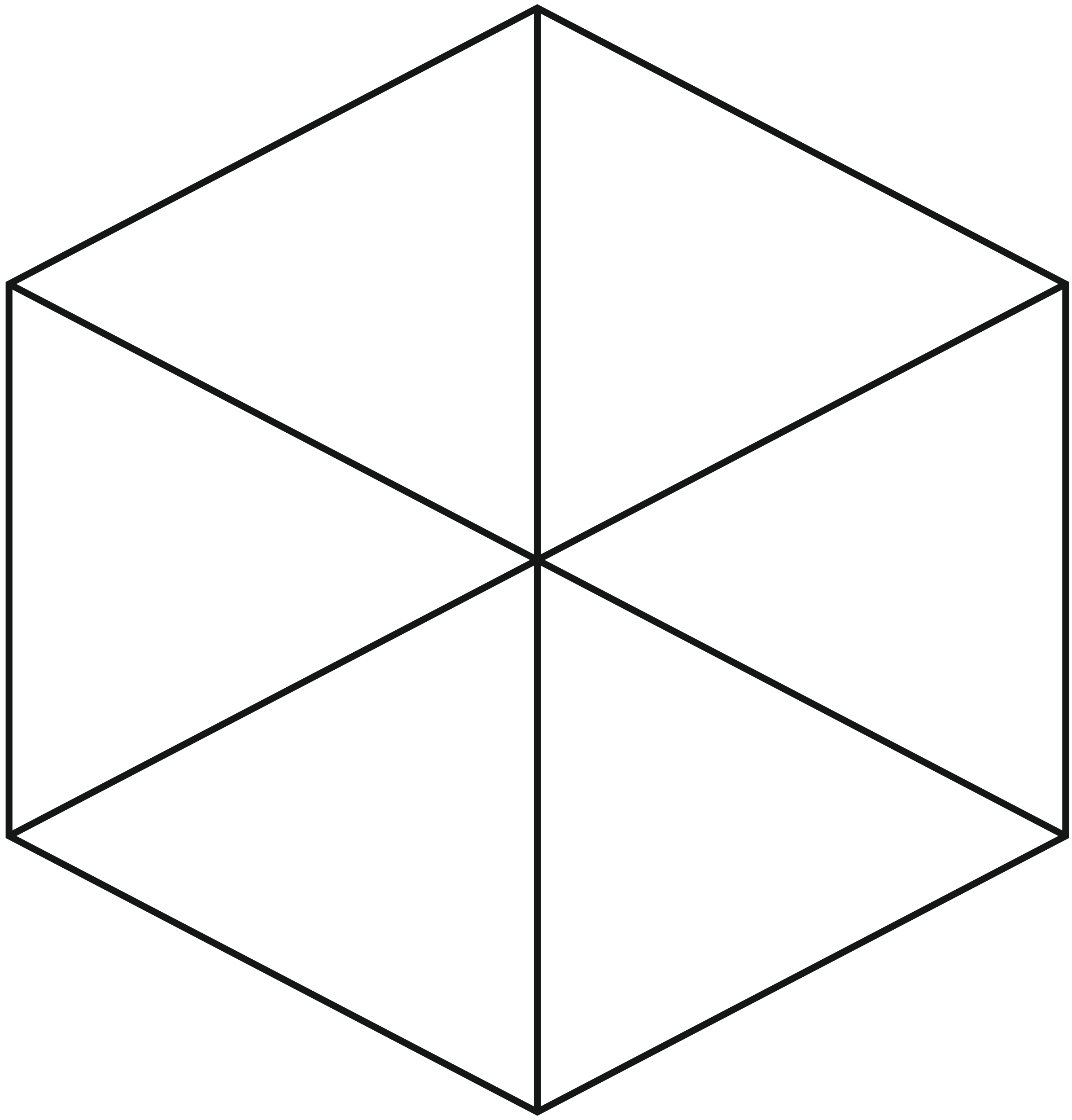

शिक्षण संकेत

बच्चों से प्रत्येक खाने में अलग–अलग रंग भरवाएँ।

पाठ 4

अंडा किसका

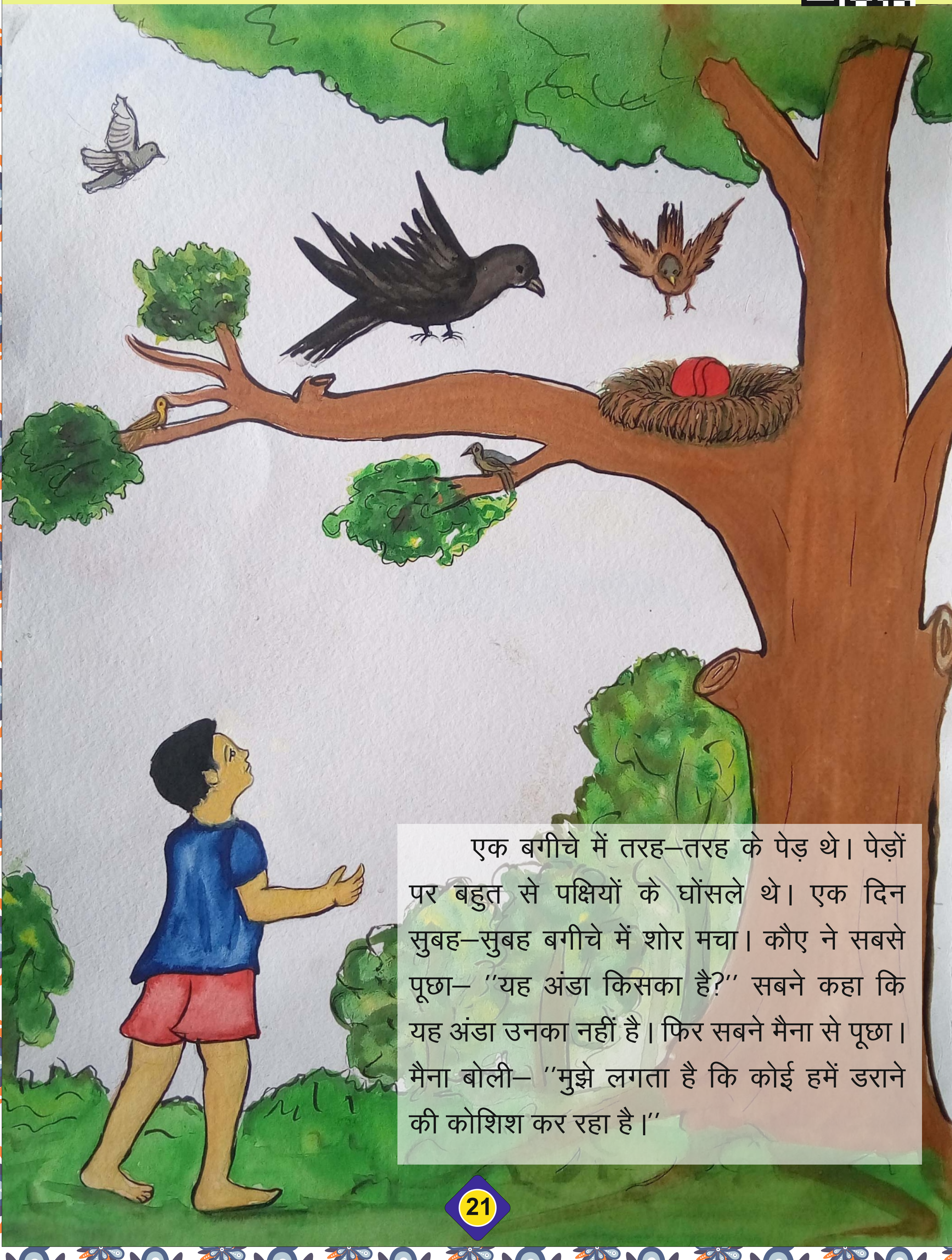

एक बगीचे में तरह–तरह के पेड़ थे। पेड़ों पर बहुत से पक्षियों के घोंसले थे। एक दिन सुबह–सुबह बगीचे में शोर मचा। कौए ने सबसे पूछा– ''यह अंडा किसका है?'' सबने कहा कि यह अंडा उनका नहीं है। फिर सबने मैना से पूछा। मैना बोली– ''मुझे लगता है कि कोई हमें डराने की कोशिश कर रहा है।''

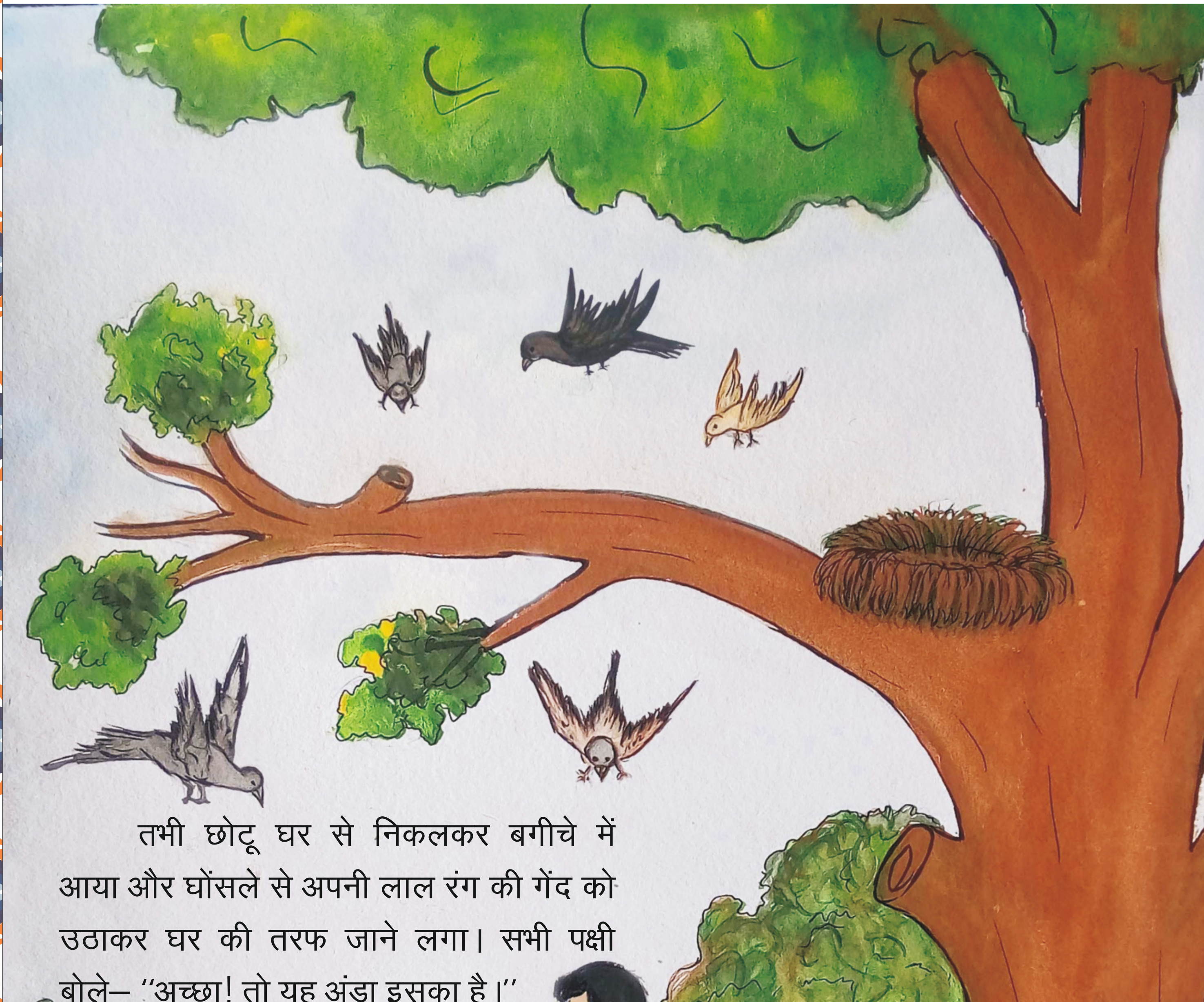

तभी छोटू घर से निकलकर बगीचे में आया और घोंसले से अपनी लाल रंग की गेंद को उठाकर घर की तरफ जाने लगा। सभी पक्षी बोले– ''अच्छा! तो यह अंडा इसका है।''

शिक्षण संकेत

बच्चों को हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँ। बाग–बगीचे, पशु–पक्षियों के रंग एवं बोली के बारे में भी चर्चा करें।

पाठ 5

आओ पढ़ें और लिखें–1

क	क	क	क
ख	ख	ख	ख
ग	ग	ग	ग
घ	घ	घ	घ
ङ	ङ	ङ	ङ

च	च	च	च
छ	छ	छ	छ
ज	ज	ज	ज
झ	झ	झ	झ
ञ	ञ	ञ	ञ

शिक्षण संकेत बच्चों से 'क' से 'ञ' तक दिये गये प्रारूप पर लेखन अभ्यास कराएँ।

पाठ 6

पानी

बच्चों मेरी सुनो कहानी,
मैं हूँ पानी, मैं हूँ पानी;
मुझको पी तुम प्यास बुझाते,
कपड़े धोते और नहाते।

शिक्षण संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों से कराएँ।
बच्चों से जल की उपयोगिता पर चर्चा करें।

रंग भरो

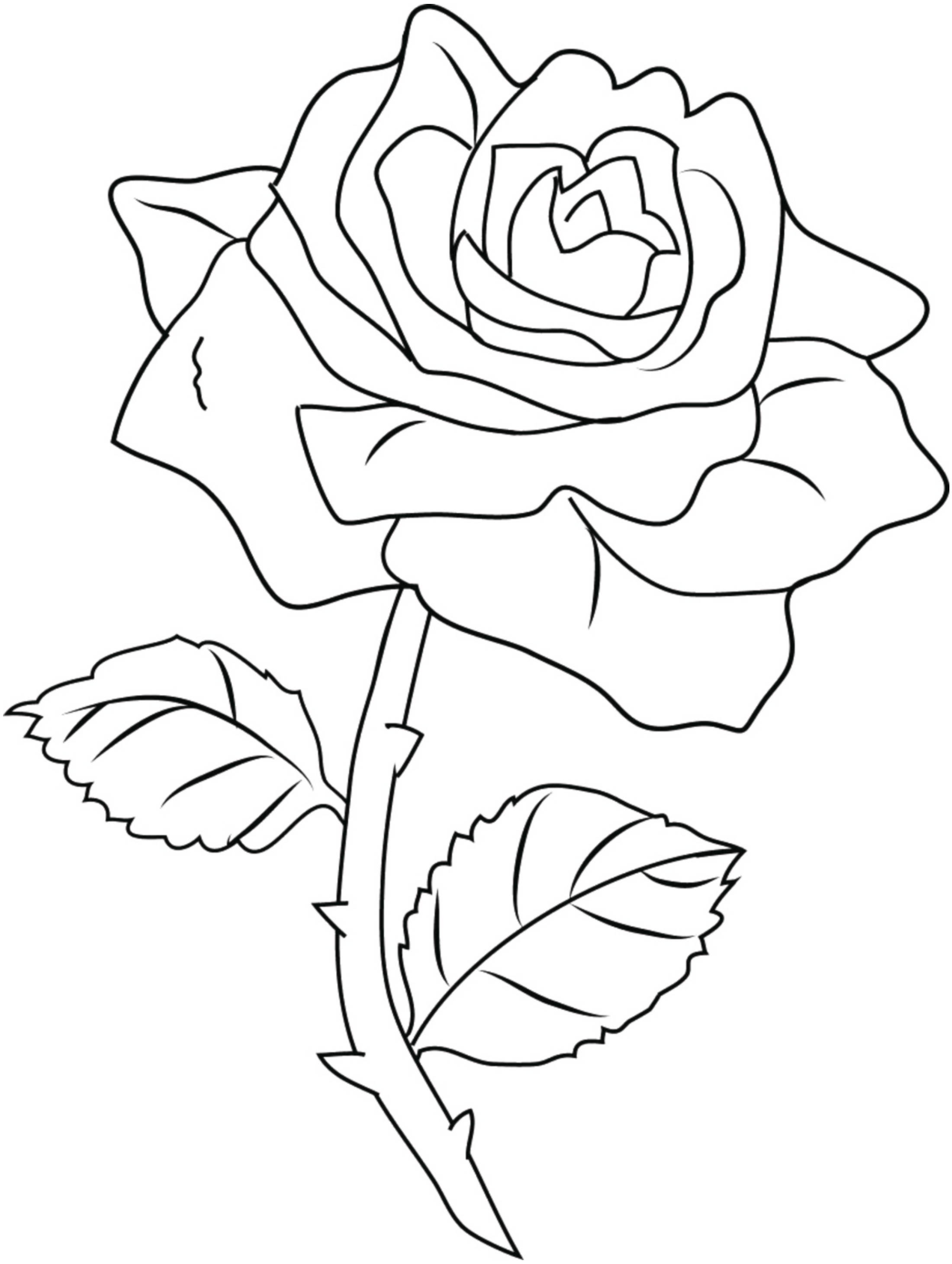

गुलाब

शिक्षण संकेत

बच्चों से चित्र में रंग भरवाएँ।

पाठ 7

आओ पढ़े और लिखें–2

ट	ट	ट	ट
ठ	ठ	ठ	ठ
ड	ड	ड	ड
ढ	ढ	ढ	ढ
ण	ण	ण	ण

त			
थ			
द			
ध			
न			

शिक्षण संकेत बच्चों से 'ट' से 'न' तक दिये गये प्रारूप पर लेखन अभ्यास कराएँ।

पाठ 8

कछुआ और खरगोश

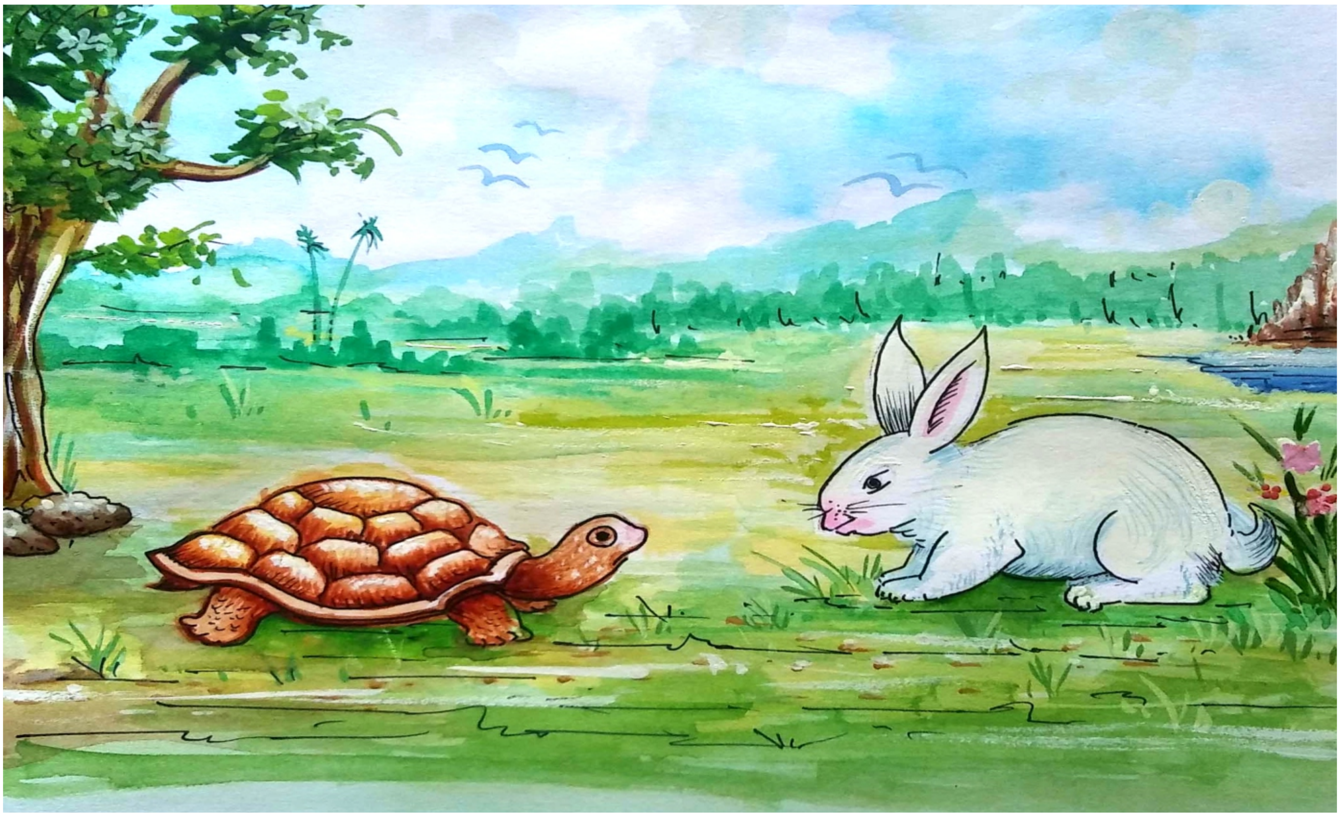

शिक्षण संकेत

बच्चों से चित्रों पर चर्चा करें। चित्र पर चर्चा के पश्चात् शिक्षक चित्रकथा को कहानी के रूप में सुनाएँ एवं कहानी से मिलने वाली सीख पर चर्चा करें।

पाठ 9

आओ पढ़े और लिखें–3

प	प	प	प
फ	फ	फ	फ
ब	ब	ब	ब
भ	भ	भ	भ
म	म	म	म

य	य	य	य
र	र	र	र
ल	ल	ल	ल
व	व	व	व

शिक्षण संकेत बच्चों से 'प' से 'व' तक दिये गये प्रारूप पर लेखन अभ्यास कराएँ।

पाठ 10

मेरी कार

लाल रंग की मेरी कार,
सीटें दो और पहिये चार;
उसमें बैठा एक सवार,
हॉर्न बजाए बारम्बार।

शिक्षण संकेत — बच्चों से कविता का सस्वर वाचन कराएँ।

रंग भरो

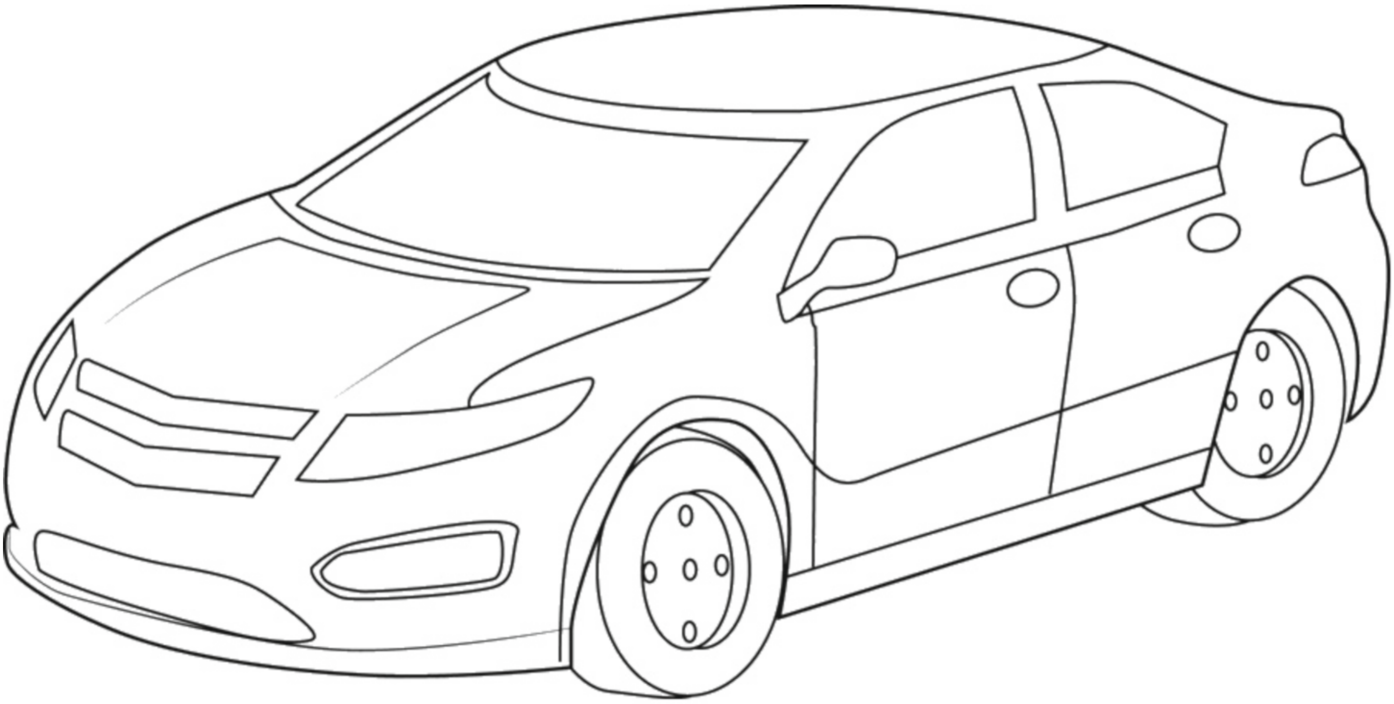

कार

शिक्षण संकेत

चित्र में बच्चों से रंग भरवाएँ।

पाठ 11

आओ पढ़े और लिखें–4

श	श	श	श
ष	ष	ष	ष
स	स	स	स
ह	ह	ह	ह

क्ष	क्ष	क्ष	क्ष
त्र	त्र	त्र	त्र
ज्ञ	ज्ञ	ज्ञ	ज्ञ

शिक्षण संकेत बच्चों से 'श' से 'ज्ञ' तक दिये गये प्रारूप पर लेखन अभ्यास कराएँ।

पाठ 12

हंस और कछुए

एक तालाब में बहुत से कछुए और हंस एक साथ रहते थे। सभी अच्छे दोस्त थे। गर्मी में तालाब का पानी सूखने लगा। तब कछुए परेशान होकर हंसों से बोले– ''आप सभी तो उड़कर दूसरे तालाब में चले जाएंगे, हम कछुए यहीं पर रह जाएंगे।'' हंसों ने कहा– ''हम तुम्हें भी अपने साथ ले चलेंगे।'' हंसों ने आपस में बातचीत करके एक नया तरीका निकाला।

दो हंसों ने एक लकड़ी के टुकड़े को दोनों ओर से पकड़ा और एक कछुआ उसे पकड़कर लटक गया। हंसों ने उसे बगल के एक पानी भरे तालाब में पहुँचा दिया। इसी तरह उन्होंने सभी कछुओं को एक–एक करके दूसरे तालाब में पहुँचा दिया। फिर सभी एक साथ मिलकर दूसरे तालाब में खुशी–खुशी रहने लगे।

शिक्षण संकेत

हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँ तथा कहानी के संदेश पर चर्चा करें।

पाठ 13

देखो, पढ़ो और लिखो–1

बस

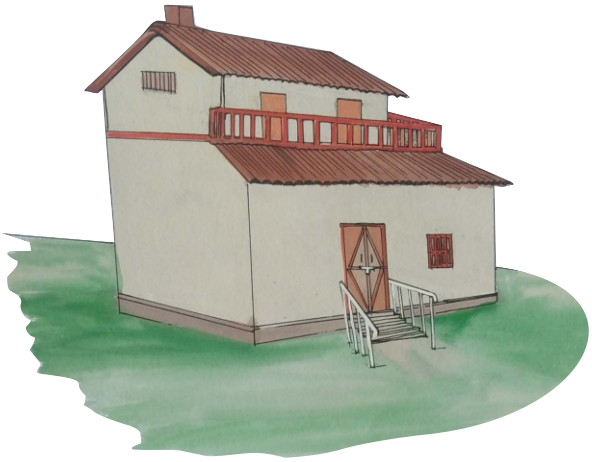

घर

कप

फल

जग

नल

शिक्षण संकेत

बच्चों से शब्दों को पढ़वाएँ।

पढ़ें और लिखें

फल चख ।

फल चख ।

जल भर ।

जल भर ।

शिक्षण संकेत

दिये गये प्रारूप पर लिखने का अभ्यास कराएँ।

आओ पढ़ें

यश उठ।
घर चल।

टब रख।
जल भर।

डर मत।
सच कह।

चल पढ़।
लड़ मत।

शिक्षण संकेत बच्चों से वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास कराएँ।

अभ्यास कार्य

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो–

- यशः ____ उठ।
- ____ चल।
- ____ भर।
- ____ कह।
- ____ रख।
- ____ मत।

पाठ 14

सहायता

एक हाथी का बच्चा जंगल में घूम रहा था। वह बहुत भूखा था। उसने देखा फल और पत्तियाँ बहुत ऊँचाई पर हैं। उसकी सूँड़ फलों एवं पत्तियों तक नहीं पहुँच पा रही थी। उसने एक जिराफ को अपनी ओर आते देखा।

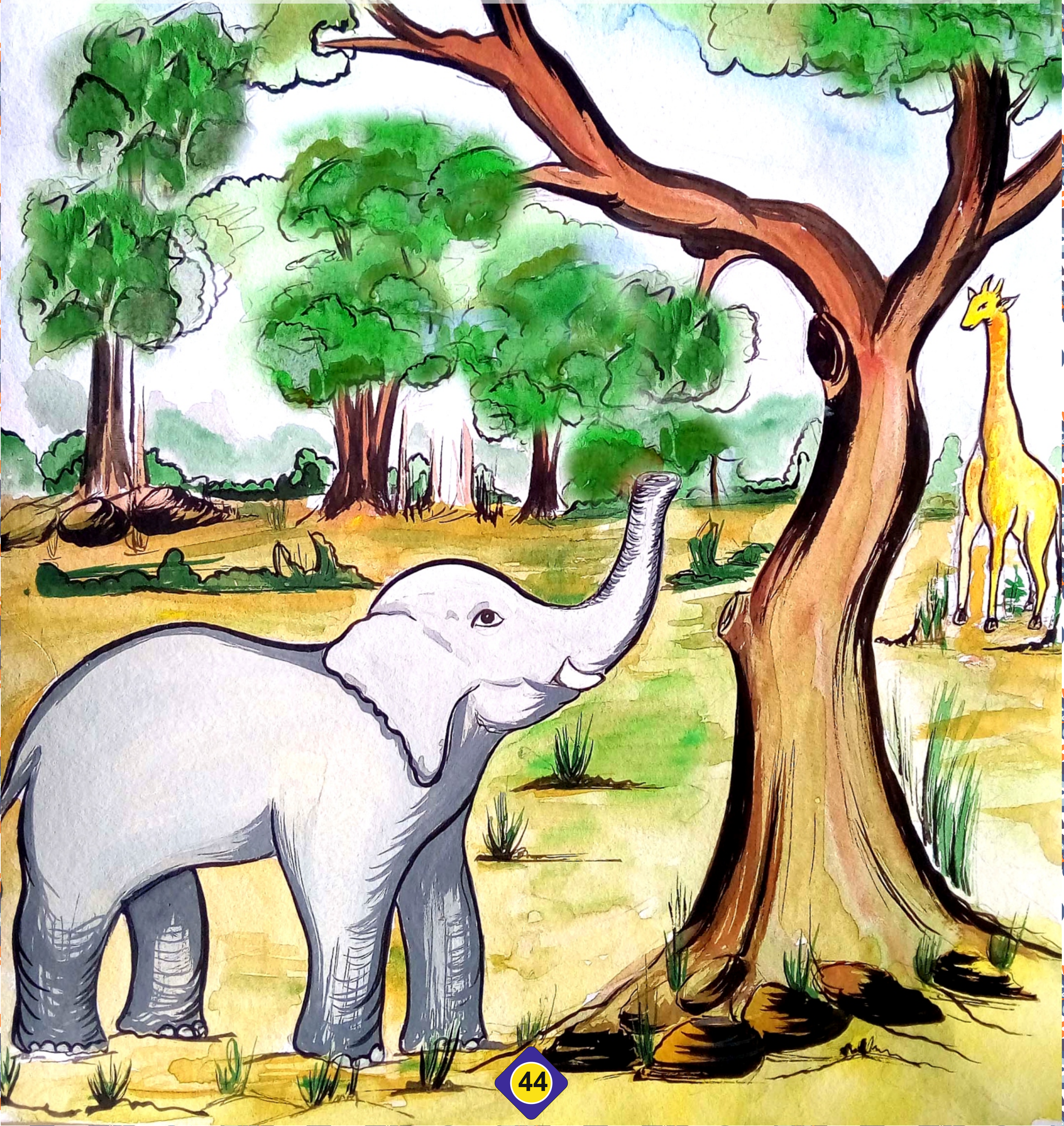

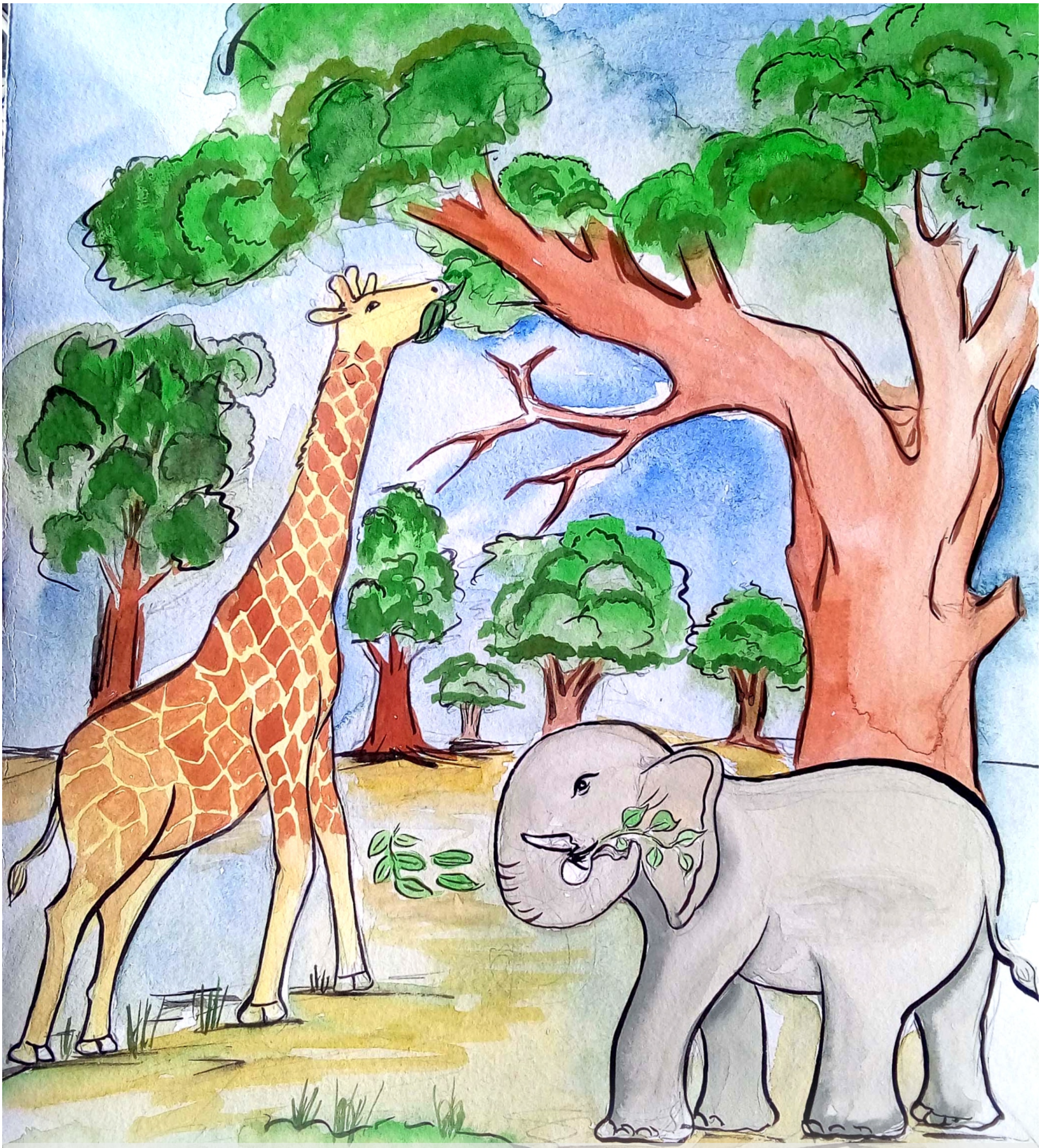

हाथी के बच्चे ने जिराफ से सहायता माँगी। जिराफ सहायता करने को तैयार हो गया। उसने फल और पत्तियाँ तोड़ कर हाथी के बच्चे को दी। हाथी के बच्चे ने जिराफ को धन्यवाद दिया।

शिक्षण संकेत बच्चों को हाव–भाव के साथ कहानी सुनाएँ और एक–दूसरे की सहायता करने के लिए प्रेरित करें।

पाठ 15

देखो पढ़ो और लिखो–2

फसल

कलम

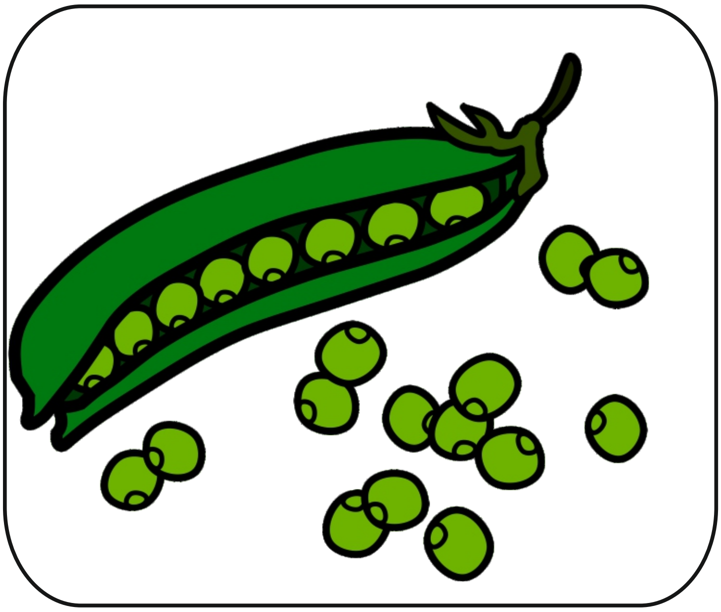

मटर

सड़क

शिक्षण संकेत चित्र दिखाकर शब्दों को पढ़वाएँ। अन्य तीन वर्णों वाले अमात्रिक शब्दों का भी अभ्यास कराएँ।

पढ़ें और लिखें

कलम सड़क

फसल मटर

शिक्षण संकेत

दिये गये प्रारूप पर लिखने का अभ्यास कराएँ।

आओ पढ़ें

रमन इधर आ।
मटर चख।

सड़क पर मत चल।
पवन बतख़ मत पकड़।

ऐनक पहन।
शरद समझ कर पढ़।

शिक्षण संकेत — बच्चों से वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास कराएँ।

अभ्यास कार्य

खाली स्थान भरो–

1 रमन ______ आ।

2 पवन ______ मत पकड़।

3 ________ पर मत चल।

4 ______ पहन।

5 शरद ______ कर पढ़।

पाठ 16

सीखो

फूलों से तुम हँसना सीखो,
कलियों से मुस्काना;
पेड़ों से तुम सीखो बच्चों,
फल पाकर झुक जाना;
सूरज से तुम सीखो बच्चों,
अँधेरे को दूर भगाना।

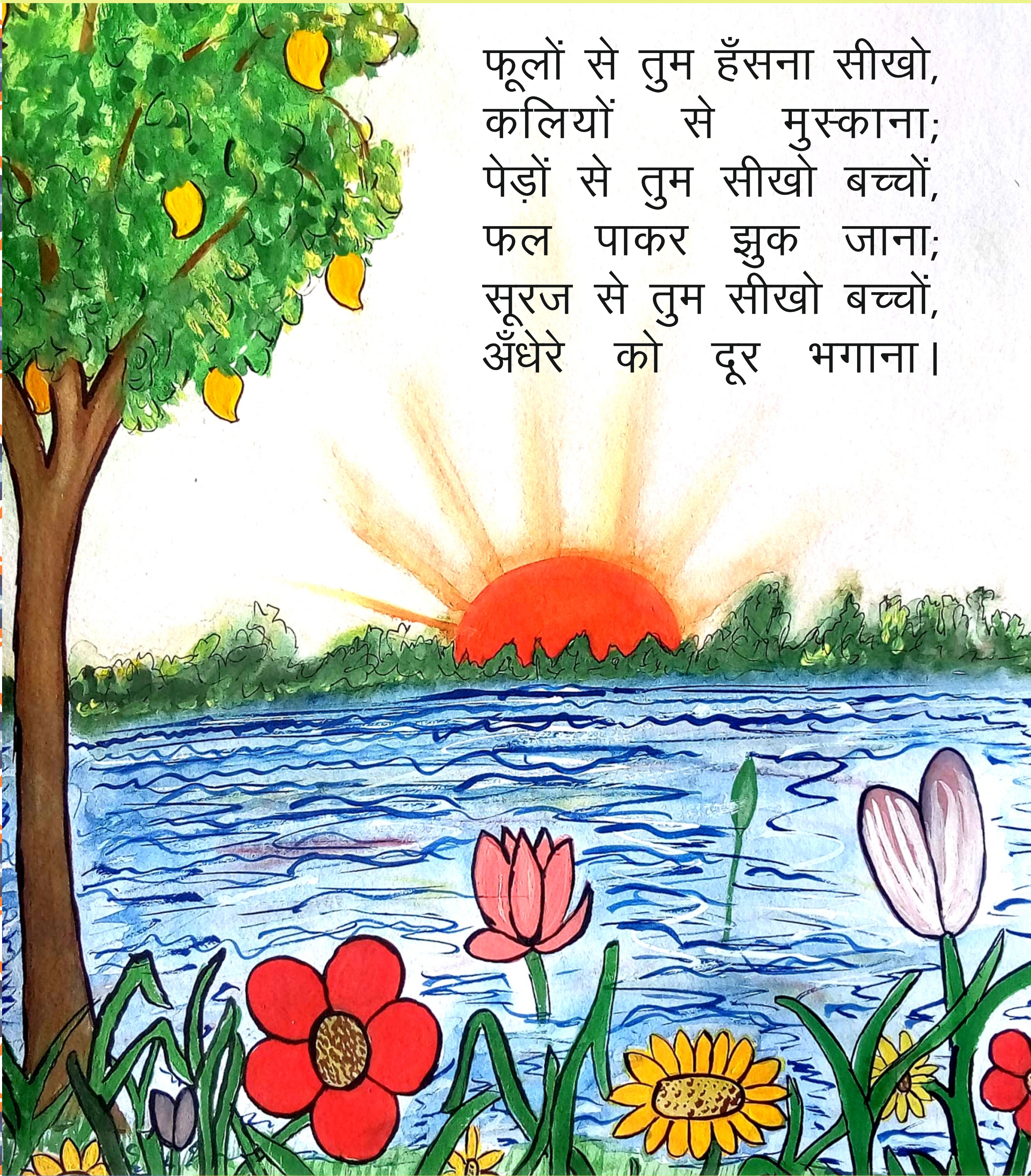

शिक्षण संकेत

कविता का सस्वर वाचन करें तथा बच्चों से करवाएँ।

पाठ 17

देखो पढ़ो और लिखो–3

बरगद

कटहल

थरमस

बरतन

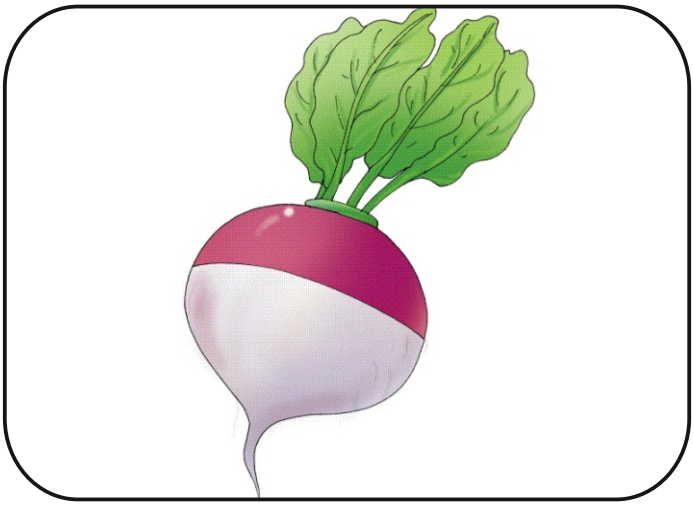

शलजम

कसरत

अदरक

शरबत

पढ़ें और लिखें

बरगद कटहल

थरमस बरतन

शलजम कसरत

अदरक शरबत

शिक्षण संकेत

दिए गए प्रारूप पर लिखने का अभ्यास कराएँ।

पाठ 18

चुन्नू–मुन्नू

चुन्नू–मुन्नू थे दो भाई,
घर में मम्मी रसगुल्ला लाई;
चुन्नू बोला– मैं खाऊँगा,
मुन्नू बोला– मैं खाऊँगा।

हल्ला सुनकर मम्मी आई,
दोनों बच्चों को समझाई;
''आधा तू ले चुन्नू बेटा,
आधा तू ले मुन्नू बेटा।

अब से झगड़ा कभी न करना;
आपस में मिलजुल कर रहना।''

शिक्षण संकेत

हाव–भाव और उचित लय के साथ कविता का सस्वर वाचन करें एवं बच्चों से कराएँ। आपस में मिलजुल रहना, मिल–बाँटकर खाना एवं माता–पिता की बात मानना आदि अच्छी आदतों पर चर्चा करें।

आओ दोहराएँ

- कलम इधर रख।
- नल तक चल। जल भर।
- मदन फल चख।
- भगत भजन कर।
- थरमस रख।
- सरपट मत चल।

राष्ट्रगान

जन–गण–मन अधिनायक, जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
पंजाब–सिंध–गुजरात–मराठा–
द्राविड़–उत्कल बंग
विंध्य–हिमाचल–यमुना–गंगा
उच्छल–जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा
जन–गण–मंगल दायक जय हे
भारत–भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे!

सत्र 2020-2021

आवरण पृष्ठ की विशिष्टियाँ–

आवरण पृष्ठ के कागज का विशिष्टिकरण : प्रयुक्त कागज वर्जिन पल्पयुक्त 175 जी0एस0एम0 का आर्ट पेपर का प्रयोग किया गया है। जिसमें कागज का बर्स्ट इण्डेक्स–न्यूनतम 0.9,वैक्स पिक्स–नो पिक्स ऑन 5ए, ग्लास परसेंट–न्यूनतम 55, ब्राइटनेस न्यूनतम 72 प्रतिशत और सरफेस पी0एच0 5.5 से 8.0 है। कागज की अन्य विशिष्टियों बी0आई0एस0 कोड आई0एस0–4658–1988 के अनुसार है, एवं कागज 53.34 सेमी0X78.74 सेमी है। आवरण पृष्ठ का बाहरी भाग चार रंगों तथा अन्दर का भाग एक रंग में मुद्रित है।

उ0 प्र0 बेसिक शिक्षा परिषद्

उत्तर प्रदेश शासन

निःशुल्क वितरण हेतु